बच्चों का अधिकार

गीता धर्मराजन
चित्रांँकनः सुजाता सिंह

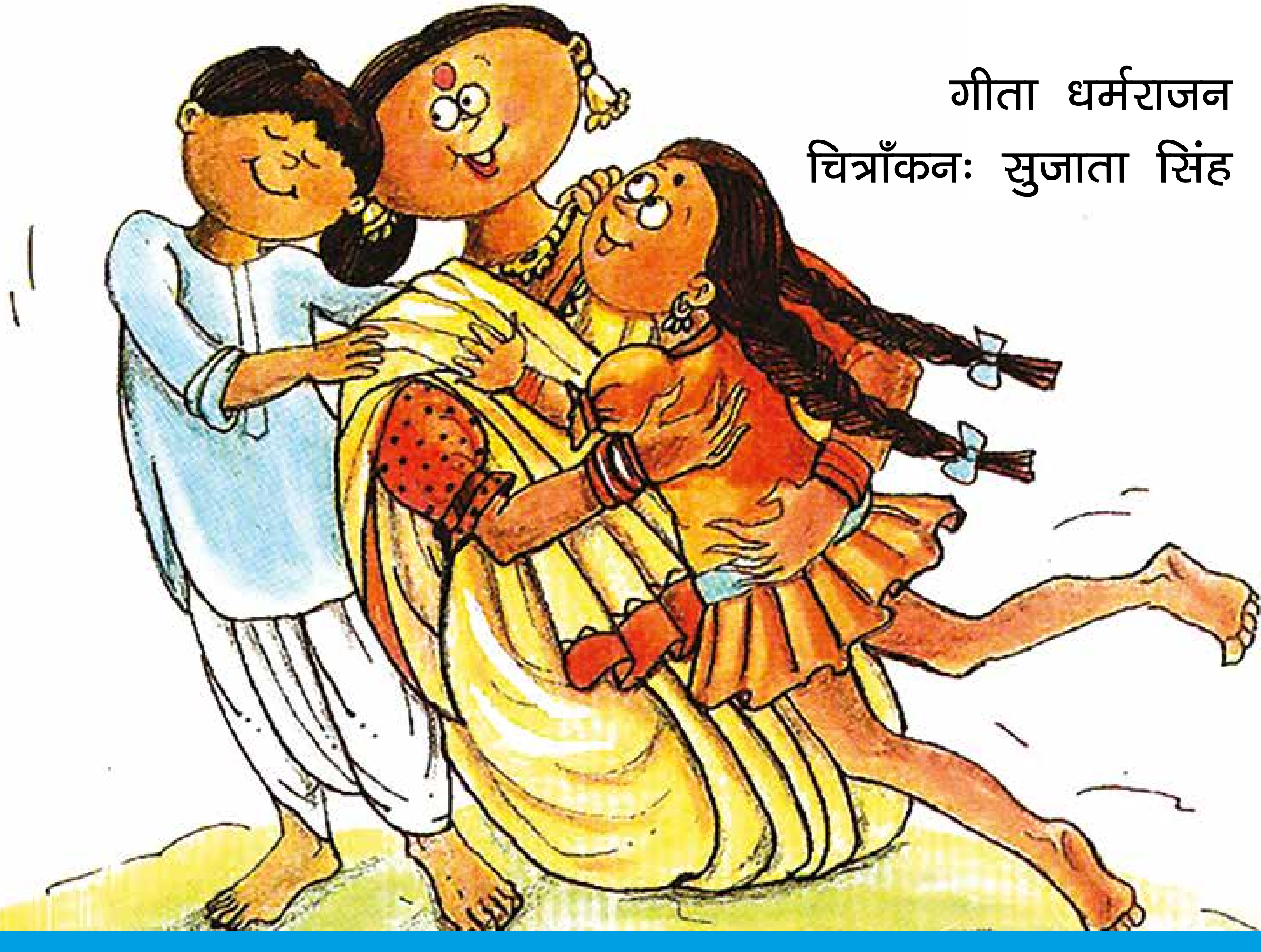

कथा की 300एम थिंकबुक

बच्चों अपने इन अधिकारों को जानो,

पढ़ने–लिखने पर हक तुम अपना मानो!

चाहे उछलो चाहे नाचो, कलाबाजी या कूद लगाओ,

निर्णय है तुम्हारा, जीवन अपना तुम आप बनाओ।

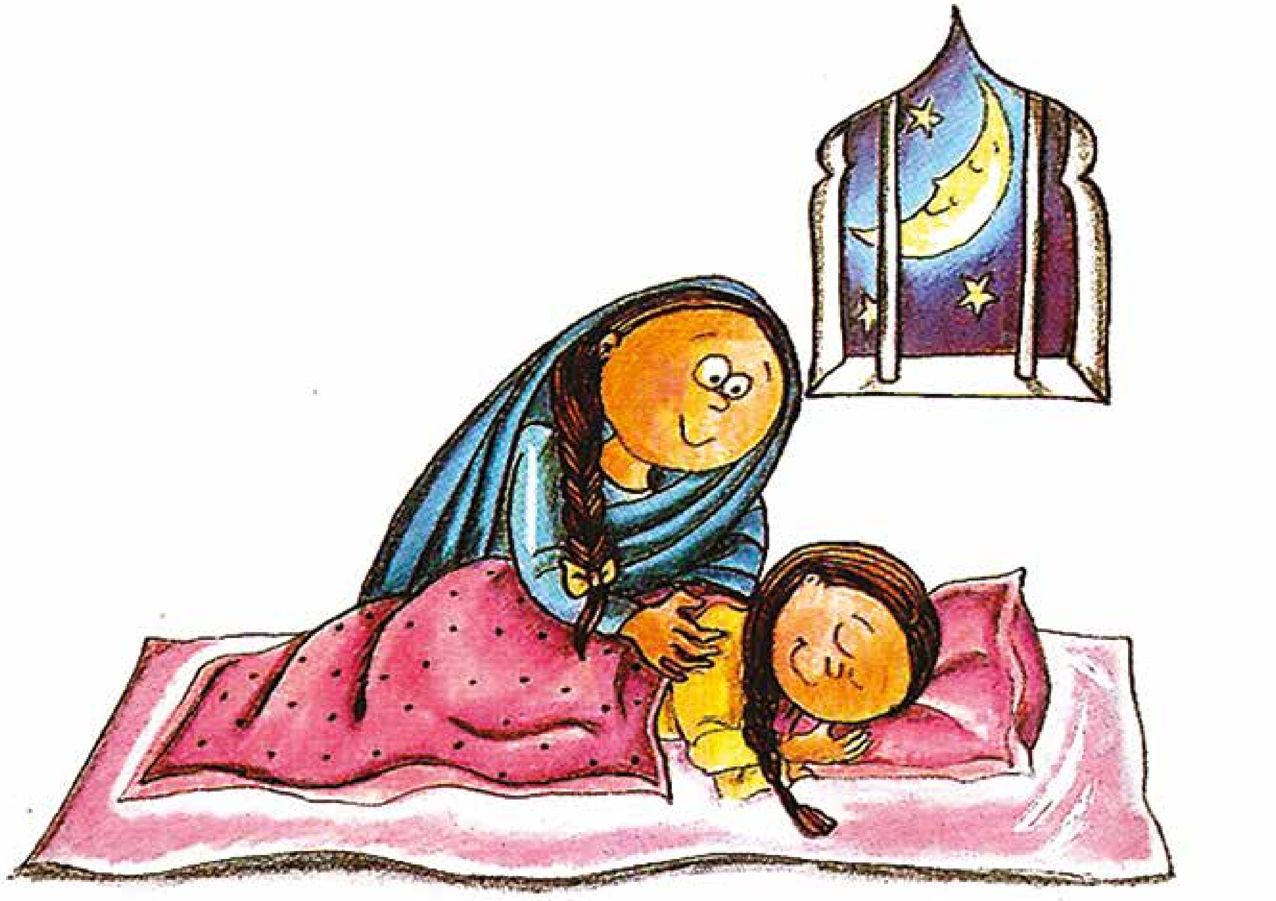

प्यारा–दुलार का हक तुम सबका

रहने को घर और रोटी–कपड़ा,

बीमारी में दवा–सेवा का अधिकार,

और युद्ध व बाढ़ की पड़े जब मार।

अगर देखने–सुनने से हो तुम लाचार,

कर सकते हो बहुत कुछ, हिम्मत न तुम देना हार।

अगर पैसे कमाने की तुम्हें है दरकार,

पढ़–सीखने का तब भी है तुम्हें अधिकार।

जाति और नाम में क्या है ख़ास ?
एक से अधिकार जब तुम सबके पास।

इसलिए छोड़ दो डर, यह हया-शर्म,
आवाज़ को अपनी करो बुलन्द।

और माँगों अपने अधिकार सारे,
क्योंकि बच्चों। ये हैं कुछ हक, सिर्फ तुम्हारे।

xhrk /ke|jktu बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और *पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय* की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

l|tkrk flg ने लंदन के *'विंबलडन स्कूल ऑफ आर्ट* और डिज़ाइन' से इलस्ट्रेशन करना सीखा है। उन्होंने डिज़ाइनर और इलस्ट्रेटर के रूप में कई प्रसिद्ध पत्रिकाओं के लिए काम किया है जैसे कि *टारगेट, इंडिया टुडे, बिजनेस टुडे, कास्मोपॉलिटन, टीन्स टुडे, नमस्ते, पेंगुइन बुक्स इंडिया, कथा, रत्ना सागर, और काली फॉर वीमेन*। इनके काम की कई प्रदर्शनियाँ भारत और विदेश में हुई हैं।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।" – **चार्ल्स लैंड्री, *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

पहला हिंदी संस्करण 2021
कृति स्वामित्व © कथा, 1994, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्रांकन कृति स्वामित्व © कथा

स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्य: हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाष: 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेल: marketing@katha-org
वेबसाइट: www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा। कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है। यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

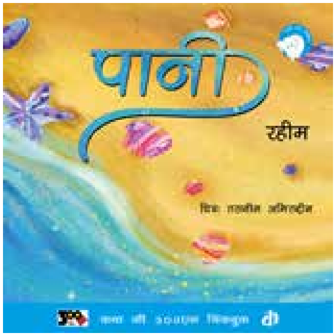

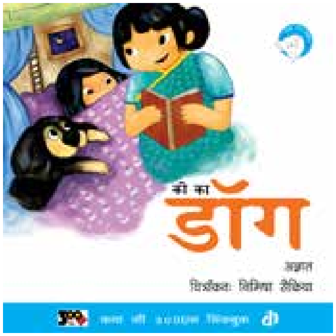

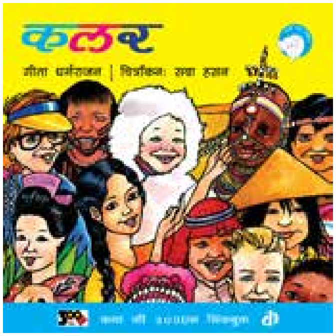

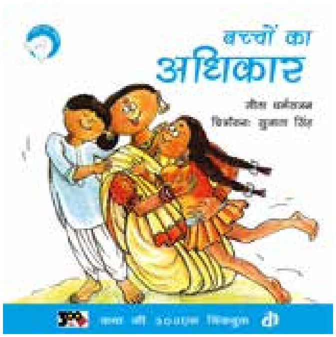

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children

a katha book

ISBN 978-93-88284-81-3

9 789388 284813

www.katha.org

₹ xxx

इसकी श्रृ श्रृंखला में